INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

MPPSC-PCS

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग

भाग – 7

दर्शनशास्त्र व मनोविज्ञान एवं लोकप्रशासन और उद्यमिता एवं समाजशास्त्र

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स **"MPPSC -PCS (Madhya Pradesh Public Service Commission) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)"** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"संयुक्त राज्य / अपर अधीनस्थ सेवा (PCS)"** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/dy0fu7

Online Order करें - https://bit.ly/3BGkwhu

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	खण्ड – (अ) दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, लोक प्रशासन एवं केस स्टडी	
	(इकाई – 1)	
1.	भारतीय षड्दर्शन, दार्शनिक/ विचारक, समाज सुधारक • भारतीय षड्दर्शन • सुकरात, प्लेटो, अरस्तू • वर्धमान महावीर, महात्मा बुद्ध, आदि शंकराचार्य, चार्वाक दर्शन, भर्तृहरि • गुरु नानक देव, कबीर, तुलसीदास, संत रविदास • रवीन्द्र नाथ टैगोर, राजाराम मोहन रॉय, देवी अहिल्याबाई होल्कर, सावित्रीबाई फुले • स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविंद, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, डॉ. भीमराव अम्बेडकर, पं. दीनदयाल उपाध्याय	1
	(इकाई – 2)	
2.	राष्ट्र निर्माण एवं नैतिक अवधारणायें • राष्ट्र की अवधारणा, शक्ति एवं घटक • राष्ट्रीय सुरक्षा, हित एवं चरित्र • राष्ट्रीय सुरक्षा संचालन, सशस्त्र सैन्य बल ○ अंग एवं प्रकार, तथा गुप्तचर एजेंसियां • मूल नैतिक अवधारणायें, ○ शुभ गुण सद्गुण, अहिंसा, उत्तरदायित्व • भगवदगीता का नीतिशास्त्र एवं प्रशासन में उसकी भूमिका	25
	(इकाई – 3)	
3.	मानवीय व्यवहार एवं मनोचिकित्सा • मनोवृत्ति	33

	○ मनोवृत्ति की विशेषताएं ○ व्यक्ति के व्यवहार का पता लगाने में सहायक ○ मनोवृत्ति का निर्माण ○ मनोवृत्ति परिवर्तन ○ प्रबोधक सम्प्रेषण ○ पूर्वाग्रह एवं भेदभाव ○ भारतीय सन्दर्भ में रूढ़िवादिता • अभिक्षमता /अभिरुचि ○ अभिक्षमता व बुद्धिमत्ता ○ अभिवृत्ति एवं सत्यनिष्ठा ○ गैर-पक्षधरता / असमर्थकवादी ○ वस्तुनिष्ठाता के समाधान ○ लोकसेवा के प्रति समर्पण ○ समानुभूति एवं सहानुभूति • सांवेगिक बुद्धि :- अवधारणा , शासन एवं प्रशासन में इसकी उपयोगिता एवं अनुप्रयोग • व्यक्तिगत भिन्नताएँ ○ व्यक्तिगत विभिन्नता की परिभाषा ○ व्यक्तिगत विभिन्नता के कारक ○ व्यक्तिगत विभिन्नताओं के प्रकार ○ सिद्धांत एवं व्यवहार विभिन्नताएं • मनोविकार एवं मनोचिकित्सा ○ अर्थ एवं परिभाषा ○ मनोविकार के प्रकार ○ अवसाद,सामाजिक दुश्चिंता, सिजोफ्रेनिया, सामाजिक दुर्भीति, द्विध्रुवी मनोविकार ○ मनोचिकित्सा का विस्तृत ज्ञान	
	(इकाई – 5)	

५.	लोक प्रशासन में नैतिक मूल्य • मानवीय आवश्यकताएं एवं अभिप्रेरणा • मानवीय आवश्यकताओं का वर्गीकरण या पिरामिड • मानव व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले विभिन्न तत्व • आत्म प्रत्यक्षीकरण की आवश्यकता • अभिप्रेरणा • लोक प्रशासन में मूल्य • लोक प्रशासन में नैतिकता • भारतीय दार्शनिक अवधारणा के रूप में शासन या प्रशासन • प्रशासन में नैतिक तत्त्व • प्रशासन में सत्यनिष्ठता का वर्गीकरण • सूक्ष्म और वृहद उत्तरदायित्व • भारत में लोक सेवकों से सम्बंधित आचार-नियम • भ्रष्टाचार ○ भ्रष्टाचार की परिभाषा ○ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के अनुसार ○ भ्रष्टाचार का क्षेत्र एवं स्वरूप ○ भारत में प्रमुख घोटाले ○ भ्रष्टाचार के दुष्प्रभाव ○ भ्रष्टाचारशोधी कानूनों का निर्माण ○ भ्रष्टाचार का मापन ○ लोकपाल और लोकायुक्त	५४
	(इकाई – ५)	
५.	• केस स्टडीज ○ केस स्टडी के उद्देश्य ○ केस स्टडी की उपयोगिता ○ केस स्टडी की विशेषताएं	४५

	○ केस अध्ययन	
	खण्ड- (ब) उद्यमिता, प्रबंधन, व्यक्तित्व विकास एवं केस स्टडी	
	(इकाई-I खंड – ब)	
I.	उद्यमिता अवधारणा एवं विकास • उद्यमिता की अवधारणा एवं महत्व • उद्यमशीलता के लक्षण, सिद्धांत, विशेषताएँ एवं नवाचार का महत्व • उद्यमशीलता की प्रक्रिया- सृजनशीलता, विचार सृजन, अनुवीक्षण एवं व्यवसाय योजना • नए उद्यम प्रबंधन में मुख्य मुद्दे एवं वैधानिक आवश्यकताएँ, महिला उद्यमियों के सामने आने वाली चुनौतियाँ • भारत में उद्यमिता का विकास- स्टार्टअप इंडिया, मेक इन इंडिया, भारत में उद्यमिता विकास को बढ़ावा देने वाले संस्थान	89
	(इकाई – 2)	
2.	व्यावसायिक संगठन एवं प्रबंधन • प्रबंध - अवधारणा, महत्व, क्षेत्र, प्रबंध एवं प्रशासन क्रय तथा सामग्री प्रबंधन। • प्रबंध प्रक्रिया, संसाधन प्रबंधन एवं प्रबंध के कार्य - नियोजन, संगठन, निर्देशन, नियंत्रण, समन्वय, निर्णयन, अभिप्रेरणा, नेतृत्व एवं संचार • समय प्रबंधन एवं संगठन • ब्रांडिंग, मार्केटिंग एवं नेटवर्किंग	95
	(इकाई—3)	
3.	प्रशासन व प्रबंधन • लोक प्रशासन में प्रबंध के महत्वपूर्ण आयाम मानव संसाधन प्रबंध	99

	• वित्तीय प्रबंध- लोक प्रशासन में उनका कार्यक्षेत्र एवं महत्व • लोक कार्य क्षेत्र में तनाव प्रबंधन एवं विवाद प्रबंधन की विभिन्न तकनीकें एवं उनका महत्व • बहुलता (अनेकता) का प्रबंधन एवं प्रशासन, जन प्रबंधन के अवसर एवं चुनौतियाँ • आपदा प्रबंधन	
	(इकाई – 4)	
4.	समग्र व्यक्तित्व विकास • समग्र व्यक्तित्व एवं राष्ट्रीय विकास • व्यक्तित्व विकास के विभिन्न घटक • सफलता की अवधारणा • सफलता प्राप्त करने में बाधाएँ • सफलता के लिए जिम्मेदार कारक • असफलता से सीखना - असफलताओं को मूल्यवान अंतर्दृष्टि और निरंतर सुधार के अवसर के रूप में स्वीकार करना • सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन- सरकारी योजनाओं के सफल क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी रणनीतियों को क्रियान्वित करना • निम्नांकित मुद्दों से संबंधित तथ्य और दृष्टिकोण- नागरिक बोध, संस्था के प्रति निष्ठा, मतदाता जागरूकता कार्यक्रम, यातायात प्रबंधन, नशाखोरी की प्रवृत्ति, खाद्य पदार्थों में मिलावट, नाइट कल्चर, मूल्य आधारित जीवन एवं विधिक जागरुकता कार्यक्रम	115
	(इकाई – 5)	
5.	केस स्टडी • प्रश्नपत्र के खण्ड (ब) में सम्मिलित विषयवस्तु पर आधारित पाठ्यक्रम	120

	समाजशास्त्र	
	(इकाई-1)	
1.	समाजशास्त्र की आधारभूत अवधारणा • समाज की भारतीय संकल्पना- कुटुम्ब, परिवार, नातेदारी, वंश, गोत्र परंपरा • समुदाय, संस्था, संघ, संस्कृति, मानदंड और मूल्य • सामाजिक समरसता के तत्व, सभ्यता एवं संस्कृति की अवधारणा । भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ। • सामाजिक संस्थाएँ - परिवार, शिक्षा, धर्म, वर्ण, ऋण, यज्ञ, संस्कार • अनुष्ठान - विभिन्न संदर्भ, जाति व्यवस्था। आश्रम, पुरुषार्थ, समाज और विवाह पर धर्म और संप्रदायों का प्रभाव	124
	(इकाई-2)	
2	भारतीय समाज में विविधता और चुनौतियाँ • भारतीय समाज की संकल्पना- भारत के लोग, विविधता में एकता • सांस्कृतिक विविधता- क्षेत्रीय, भाषायी, धार्मिक और जनजातीय • अपराध का बदलता परिदृश्य - नशीली दवाओं की लत, आत्महत्या, साइबर अपराध, महिलाओं के प्रति अपराध एवं घरेलू हिंसा • वर्तमान बहस - भारत में परंपरा और आधुनिकता • राष्ट्र निर्माण की समस्याएँ - धर्मनिरपेक्षता, बहुलवाद और राष्ट्र निर्माण	146
	(इकाई-3)	
3.	ग्रामीण एवं नगरीय समाजशास्त्र	157

	• ग्रामीण समाज के अध्ययन के उपागम- ग्रामीण-शहरी अंतर ग्रामीणवाद और नगरवाद • किसान अध्ययन, 73वें संशोधन से पहले और बाद में पंचायती राज व्यवस्था, ग्रामीण नेतृत्व, गुटबाजी, लोक सशक्तीकरण • ग्रामीण विकास के सामाजिक मुद्दे और रणनीतियाँ- बंधुआ और प्रवासी मजदूर, ग्रामीण समाज में बदलाव के रुझान • नगरीय समुदाय की विशेषताएँ, नगरीय समुदाय में परिवर्तन, नगरीकरण के कारण एवं प्रभाव । • नगर नियोजन की अवधारणा, नगर नियोजन को प्रभावित करने वाले कारक, भारत में नगरीय प्रबंध की समस्याएँ	
	(इकाई-4)	
4.	औद्योगीकरण, वैश्वीकरण, सामाजिक विकास और जनसंख्या • भारत में औद्योगीकरण और सामाजिक परिवर्तन- परिवार, शिक्षा, स्तरीकरण पर प्रभाव। औद्योगिक समाज में वर्ग और वर्ग संघर्ष । • वैश्वीकरण की चुनौतियाँ, समाजशास्त्र का भारतीयकरण, शिक्षा का निजीकरण । • सामाजिक संरचना और विकास, सुविधाप्रदाता, अवरोधक, विकास और सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ । • संस्कृति और विकास- सहायक / बाधक के रूप में संस्कृति, उत्तर-आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण । • भारत में जनसंख्या वृद्धि और वितरण -- 1901 से वृद्धि, कारण और प्रभाव । • अवधारणाएँ- प्रजनन क्षमता, मृत्यु दर, रुग्णता, प्रवास, आयु और लिंग संरचना ।	178
	(इकाई-5)	
5.	मानव संसाधन विकास और सामाजिक कल्याण की योजनाएँ	188

	• राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 - विजन, सिद्धांत, स्कूली शिक्षा, उच्च शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा, वयस्क शिक्षा और जीवन पर्यन्त सीखना • सामाजिक वर्गों और उनके कल्याण कार्यक्रमों से संबंधित मुद्दे - वरिष्ठ नागरिक, बच्चे, महिलाएँ, विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग और विकासात्मक परियोजनाओं से उत्पन्न विस्थापित समूह, बालिकाओं की शिक्षा से जुड़े मुद्दे • सामुदायिक विकास कार्यक्रम, विस्तार शिक्षा, पंचायती राज, सामुदायिक विकास में गैर-सरकारी संगठनों (एन.जी.ओ.) की भूमिका • मध्यप्रदेश में जनजातियों की स्थिति एवं सामाजिक संरचना, रीति-रिवाज • जनजातियों में विश्वास, विवाह रिश्तेदारी, धार्मिक विश्वास, परंपराएँ, त्यौहार और उत्सव • मध्यप्रदेश की लोक संस्कृति	

ठीक-ठीक अनुष्ठान करने का उपदेश मीमांसक देते हैं। कर्म तीन प्रकार के बताये गये हैं – अनिवार्य, ऐच्छिक तथा निषिद्ध। अनिवार्य कर्म दो प्रकार के हैं – नित्य अर्थात् प्रतिदिन किये जाने वाले (जैसे – पूजा, प्रार्थना आदि) तथा नैमित्तिक अर्थात् विशेष अवसरों पर किये जाने वाले।

दार्शनिक / विचारक –

सुकरात :- यह ग्रीस का प्रमुख विचारक है। ग्रीस में सुकरात से ही नैतिक विचारों की शुरुआत हुई सुकरात के द्वारा सेफिस्टो की आलोचना की गई क्योंकि अगर नैतिक नियमों को आत्मनिष्ठ माना गया तो सामाजिक व्यवस्था स्थापित नहीं की जा सकती। अतः नैतिक नियम वस्तुनिष्ठ होने चाहिए।

- मानव जीवन के कल्याण के लिए आवश्यक है, कि व्यक्ति सद् गुणी जीवन जीये।
- सुकरात के अनुसार सद् गुण एक है, वह ज्ञान है, यहाँ ज्ञान का अर्थ तथ्यात्मक ज्ञान से नहीं है, ज्ञान का वास्तिविक अर्थ है आत्मज्ञान अर्थात् सही - गलत, शुभ - अशुभ, उचित - अनुचित के बीच सटीक भेद कर पाना।
- सुकरात के अनुसार ज्ञान की शुरुआत अज्ञान से ही होती है। इसका प्रसिद्ध कथन है - "मुझे मेरे अज्ञान का ज्ञान है"
  - सुकरात के अनुसार अन्य सद् गुण जैसे - विवेक, साहस, संयम, आदि ज्ञान के ही रूप हैं।
  - इसे सद् गुणों की एकता का सिद्धांत कहा जाता है।
  - सुकरात ने शारीरिक सुख की बजाय मानसिक शांति और स्थिरता को अधिक महत्त्व दिया है। इसका प्रसिद्ध कथन है-
  - मैं सभी जीवित लोगों में सबसे बुद्धिमान हूँ, क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि मैं कुछ नहीं जानता हूँ।"

सुकरात के अनुसार सद्गुण :-

कथन : (i) जहाँ सम्मान है, वहाँ डर है, पर ऐसी हर जगह सम्मान नहीं है जहाँ डर है, क्योंकि संभवतः डर सम्मान से ज्यादा व्यापक है।"

(ii) "इस दुनिया में सम्मान से जीने का सबसे महान तरीका है, कि हम वो बनें जो हम होनें का दिखावा करते हैं।"

(iii) सिर्फ जीना मायनें नहीं रखता सही तरीके से जीना मायनें रखता है।"

प्लेटो :- यह सुकरात का शिष्य था ।

इसकी प्रमुख पुस्तकें - (i) रिपब्लिक (ii)फिलेब्स

प्लेटों के कथन :

(I) "सोचने का मतलब है कि आपकी आत्मा खुद से बातचीत कर रही है।"

(ii) "साहस ये जानना है कि किससे नहीं डरता है।"

(iii) "जो अच्छा सेवक नहीं है, वो अच्छा मालिक कभी नहीं बन सकता है।"

(iv) "मजबूरी में अर्जित किया गया ज्ञान मन पर पकड़ नहीं बना पाता।"

प्लेटो का प्रमुख सिद्धांत :-

(a) **प्रत्यय का सिद्धांत :-** ज्ञान के वास्तविक स्वरूप को समझने के लिये प्लेटो ने यह सिद्धांत दिया।

प्लेटो ने एक 'प्रत्ययों के जगत की कल्पना की। इसके अनुसार भौतिक जगत असत्य और अवास्तविक है जबकि प्रत्ययों का जगत सत्य और वास्तविक है, सभी वस्तुएँ प्रत्ययों की अपूर्ण प्रतिकृतियाँ हैं।

- प्रत्यय अमूर्त, अनश्वर और पूर्ण होते हैं। वास्तविक ज्ञान प्रत्ययों का ज्ञान है।

सुकरात के अनुसार वही व्यक्ति सद् गुणी है जो कि बुद्धि के द्वारा 'सद् गुणों के प्रत्यय ' को जान चुका है।

- सबसे महत्त्वपूर्ण प्रत्यय 'शुभ का प्रत्यय ' है। यदि कोई व्यक्ति शुभ के प्रत्यय को जान लेता है तो उसमें सभी सद् गुण स्वतः ही आ जाते हैं।

(b) **प्लेटो का न्याय का सिद्धांत :-** प्लेटो ने तीन प्रकार के न्याय बताये हैं -

(i) व्यक्ति में न्याय :- इसके अनुसार आत्मा के तीन पक्ष होते हैं जिनके तीन सद् गुण होते हैं। बुद्धि का सद् गुण - विवेक। संवेग का सद् गुण - साहस। इच्छा का सद् गुण - संयम।

यदि तीनों सद्गुणों के बीच संतुलन बनाए रखा जाए तथा व्यक्ति अपने प्रधान सद् गुण के अनुसार आचरण करे तब व्यक्ति में न्याय स्थापित होता है।

(ii) समाज में न्याय :- प्लेटो के अनुसार समाज को प्रधान सद् गुणों के अनुसार कार्य का विभाजन किया गया है।

प्रत्येक वर्ग को उसे आवंटित कार्य को ही करना चाहिए तथा दूसरों के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। इससे समाज में न्याय की स्थापना होती है।

(iii) राज्य में न्याय :- प्लेटो के अनुसार वह राज्य न्यायपूर्ण है जिसका राजा दार्शनिक है। ऐसे राज्य को 'यूटोपिया' कहा गया है।

प्लेटो के अनुसार ५ मुख्य सद् गुण हैं -

विवेक, साहस, संयम, न्याय।

इनमें न्याय सबसे महत्त्वपूर्ण है।

अरस्तु :- अरस्तु ने प्लेटो की आलोचना की तथा प्रत्ययों के जगत को कल्पना मात्र माना।

अरस्तु के अनुसार सद् गुणों की संख्या को चार तक सीमित नहीं किया जा सकता है। ऐसा कोई राज्य स्थापित नहीं किया जा सकता है जो पूर्णतः न्यायपूर्ण हो। अतः यूटोपिया मात्र एक कल्पना है।

प्लेटो ने सद् गुणों को जन्मजात माना है जबकि अरस्तु के अनुसार सद् गुण जन्मजात नहीं होते हैं। इन्हें अर्जित किया जाता है। अरस्तु की नीतिशास्त्र का जनक कहा जाता है।

क्योंकि इसके द्वारा नीतिशास्त्र की पहली पुस्तक लिखी गई - "निकोमेकियन एथिक्स"

अरस्तु के अनुसार जीवन का परम उद्देश्य यूडोमोनिया की प्राप्ति है। जिसका अर्थ है - 'आनंद।

यदि व्यक्ति की क्षमताओं और वास्तविकता के बीच अन्तर अधिक हो तब इसमें तनाव, चिन्ता और घबराहट रहेगी।

यदि अन्तर कम हो जाता है तो व्यक्ति आनंद की प्राप्ति करता है।

यूडेमोनिया की प्राप्ति के लिए सद् गुणी जीवन आवश्यक है।

अरस्तु के अनुसार विभिन्न सद् गुणों को दो भागों में बाँटा जा सकता है।

(1) **बौद्धिक सद् गुण** :- विवेक, (यह अध्ययन से प्राप्त होते हैं)

(2) **नैतिक सद् गुण** :- साहस, संयम (इन्हें अभ्यास से प्राप्त किया जा सकता है)

अरस्तु के अनुसार सबसे महत्त्वपूर्ण सद् गुण 'मध्यम मार्ग है।

(iv) **धार्मिक दबाव** - व्यक्ति पर पाप - पुण्य, स्वर्ग - नरक, तथा ईश्वर का दबाव होता है जिससे व्यक्ति अधिकतम लोगों के सुख के लिए कार्य करता है।

बेन्थम एक निकृष्ट सुखवादी है क्योंकि यह सुख में केवल मात्रात्मक भेद को स्वीकार करता है अर्थात् सुख अधिक और कम हो सकता है यह उच्चकोटि और निम्नकोटि का नहीं होता है।

बेन्थम के अनुसार सुख को मापा भी जा सकता है। इसके लिए बेन्थम द्वारा सुखकलन का सिद्धांत दिया गया

सुख को सात कारकों के आधार पर मापा जा सकता है -

(a) निश्चितता (b) निकटता (c) अवधि

(d) तीव्रता (e) शुद्धता (f) उत्पादकता

(g) व्यापकता

<u>वर्धमान महावीर</u> -

- **जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर** थे।
- जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक महावीर स्वामी।
- जन्म 540 ई.पू. कुण्डग्राम में।
- बचपन का नाम वर्धमान
- पिता- सिद्धार्थ
- माता – त्रिशला
- पत्नी – यशोदा
- पुत्री – प्रियदर्शना (अणोज्जा)
- दामाद – जमालि
- गृहत्याग 30 वर्ष की आयु में
- ज्ञान प्राप्ति 42 वर्ष की आयु में **ऋम्भिक ग्राम** में ऋजुपालिका नदी के किनारे साल वृक्ष के नीचे उन्हें **कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई**।
- उपदेश- अर्द्ध-मागधी भाषा में
- प्रथम उपदेश राजगृह में
- प्रथम शिष्य- जमालि
- चम्पा नरेश दधिवाहन की पुत्री चन्दना प्रथम भिक्षुणी थी।
- महावीर स्वामी की मृत्यु 468 ई.पू. पावापुरी बिहार में
- महावीर शिक्षा प्राकृत भाषा में देते थे।

<u>महावीर द्वारा बताये गए प्रमुख सिद्धांत</u> –

- इन्होंने बडो के प्रधानता को निरस्त किया।
- भगवन के अस्तित्व को नाकारा
- कर्म को प्रधान बताया
- समाज में समानता पर जोर दिया।
- सम्पूर्ण संसार सार्वभौमिक सिद्धांत से चलता है।

<u>जैन धर्म की शिक्षाएं और विचार</u> :-

- जैन धर्म आज विश्व के सबसे खूबसूरत धर्मों में से एक माना जाता है। हम इस धर्म द्वारा ग्रहणीय कुछ प्रमुख शिक्षाओं पर नज़र डाल सकते हैं –
- अहिंसा का जो रूप हमारे समक्ष जैन धर्म रखता है वह अन्यत्र दुर्लभ है।
- जैन धर्म का महत्वपूर्ण दर्शन है 'अनेकांतवाद'। अर्थात एक वस्तु में दो परस्पर विरोधी या अनेक
- धर्मों का समावेश हो सकता है। अनेकांतवाद को अहिंसा का व्यापक रूप माना जा सकता है।
- जैन धर्म का एक और दर्शन है 'स्यादवाद'। अर्थात विभिन्न वस्तुओं से वस्तुगत अनेक धर्मों का प्रतिपादन।
- स्यात् अस्ति', 'स्यात् नास्ति', स्यात् अस्ति नास्ति', 'स्यात् अवक्तव्य,' 'स्यात् अस्ति अवक्तव्य', 'स्यात् नास्ति अवक्तव्य' और 'स्यात् अस्ति नास्ति अवक्तव्य', इन सात भागों के कारण स्यादवाद को सप्तभंगी नाम से भी जाना गया।
- जैन धर्म भी कर्म के सिद्धांत पर बल देता है। इसके अनुसार हमें अपने कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है।
- जैन धर्म में नित्य ईश्वर या अवतारवाद को स्वीकार नहीं किया गया है।
- जैन धर्म में आत्म शुद्धि पर बल दिया जाता है। यह शुद्धता तन, मन और आत्मा तीनों स्तर पर होना चाहिए।
- जैन धर्म जातिवाद को स्वीकार नहीं करता है। इनके धर्म में सभी जातियों का स्वागत है तथा उन्हें बराबर महत्व दिया जाता है।

<u>जैन दर्शन</u>

- स्याद्वाद
- अनेकान्तवाद

- डॉ. अम्बेडकर के लिए लोकतंत्र का अभिप्राय, मूलतः यदि सामानिक, आर्थिक लोकतंत्र से है, तो क्या साम्यवाद एक बेहतर आदर्श नहीं है? यहां यह उल्लेखनीय बिंदु है, कि उन्होंने लोकतंत्र के साथ सामानिक न्याय स्थापित करने पर बल दिया, लोकतंत्र की शर्त नहीं। इसीलिए वर्ग - संघर्ष और साम्यवाद के आदर्श के बजाए, डॉ. अम्बेडकर ने लोकतान्त्रिक समाजवाद को स्वीकार किया।

डॉ. अम्बेडकर ने लोकतंत्र के सफल कार्यान्वयन के लिए कुछ आधारभूत शर्तो का भी उल्लेख किया -

1. जिसमें दलीय प्रतिस्पर्धा प्रणाली को आवश्यक मानते थे।
2. लोकतंत्र में विपक्ष की भूमिका को महत्त्वपूर्ण मानते थे।
3. तटस्थ एवं निष्पक्ष सिविल सेवा को आवश्यक मानते थे।
4. आम नागरिकों एवं राजनीतिज्ञों से सार्वजनिक जीवन में किन्हीं मानदंडो या नैतिक मूल्यों के पालन की अपेक्षा भी करते हैं।
5. उनके लोकतंत्र का आशय, केवल बहुमत का शासन नहीं, अपितु लोकतंत्र तभी सफल होगा, जब अल्पसंख्यकों के भी अधिकार की रक्षा हो ।
6. लोकतंत्र के बेहतर क्रियान्वयन के लिए संविधान एवं कुछ संस्थाएं आवश्यक हैं। जैसे- महालेखा नियंत्रक परीक्षक एवं संघ लोक सेवा आयोग जैसी संस्थाएं।

<u>डॉ. अम्बेडकर के विचार संविधान के किन- किन प्रावधानों में दिखाई देता है</u> -

1. अनुसूचित जातियों या जनजातियों के लिए विशेष प्रावधान, संघीय सरकार के शक्तिशाली होने का समर्थन करना एवं अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा पर बल देगा। यहां यह उल्लेखनीय है, कि डॉ. अम्बेडकर अनुसूचित जातियों, जनजातियों के कल्याण के लिए एक शक्तिशाली संघीय सरकार का समर्थन करते थे, क्योंकि उनके अनुसार, गांव एवं स्थानीय शासन पर जातीय व्यवस्था का प्रावधान अधिक है। इसीलिए दलितों के कल्याण का दायित्त्व स्थानीय एवं राज्य सरकारों को नहीं सौंपा गया।
2. एकीकृत न्यायपालिका का समर्थन करना।
3. भारत में संविधान का व्यापक या व्यवस्थित होने का एक बड़ा कारण है, कि संविधान में प्रत्येक प्रावधानों का विस्तृत रूप में उल्लेख किया गया है, एक संविधान में विभिन्न प्रशासनिक प्रावधानों का उल्लेख कर दिया गया है जैसे - संघ लोक सेवा आयोग, महान्यायवादी, महालेखा परीक्षक। ये संस्थाएं संवैधानिक सरकार को ज्यादा सरल और सहज बनाती हैं। यहां पर भी ध्यान देने योग्य बिंदु हैं, कि भारत में जिस लोकतान्त्रिक शासन का प्रयोग किया जा रहा था। वह आधुनिक पाश्चात्य लोकतंत्र था। जबकि दूसरी ओर भारतीय समाज अभी भी परंपरागत समाज था। इसीलिए लोकतंत्र के सफल संचालन की आवश्यक शर्त थी, कि कम से कम बिंदुओं को परंपरा के लिए छोड़ा जाए।
4. डॉ. अम्बेडकर का प्रभाव मूल अधिकारों और विशेषकर संवैधानिक उपचार के अधिकार में दिखता है। मूल अधिकारों में संरक्षणात्मक विभेद की कल्पना एवं अस्पृश्यता को प्रतिबंधित किए जाने पर अम्बेडकर का प्रभाव देखा जा सकता है।
5. निदेशक तत्वों को डॉ. अम्बेडकर बहुत ही महत्त्वपूर्ण मानते थे, क्योंकि निदेशक तत्व सामानिक, आर्थिक लोकतंत्र का आधार है। उनका यह भी प्रयास था, कि सभी निदेशक तत्वों को 10 वर्ष की अवधि में बाध्यकारी रूप में लागू किया जाए।

<u>डॉ. अम्बेडकर के अनुसार समाजवाद क्या है</u> -

- डॉ. अम्बेडकर का समाजवाद, फेबियन समाजवाद है। डॉ. अम्बेडकर समाजवादी आदर्श में दृढ़ आस्था रखते थे, लेकिन वे कभी भी मार्क्सवादी नहीं बने। उनके लिए समाजवाद का अभिप्राय, लोकतान्त्रिक समाजवाद था। अतः लोकतंत्र और समाजवाद एक- दूसरे के पूरक हैं, विरोधी नहीं। डॉ. अम्बेडकर का समाजवाद फेबियन समाजवादियों जैसा है। जो कल्याणकारी राज्य के द्वारा समाजवाद की प्राप्ति का प्रयास करते हैं। अतः अम्बेडकर के समाजवाद को राज्य समाजवाद भी कहा जा सकता है। वस्तुतः समाजवादी मूलतः मानववादी एवं नैतिक विचारधारा है, जो समाज में समानता और बंधुता स्थापित करने पर बल प्रदान करती है, जिसका प्रभाव भारतीय संविधान में देखा जा सकता है।जिसके अंतर्गत अनुसूचित जातियों, जनजातियों, महिलाओं एवं बच्चों तथा पिछड़े वर्गों के के उत्थान के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं। सामानिक रूप में समाजवादी व्यवस्था में जाति, लिंग जैसे भेद अप्रासंगिक होंगे, तथा छुआ - छूत का कोई स्थान नहीं होगा।
- समाजवाद, समानता और बंधुता स्थापित करने के लिए आर्थिक रूप में भी प्रत्येक व्यक्ति को जीवन की न्यूनतम सुविधाएं उपलब्ध कराने पर भी बल देता है।
- अतः डॉ. अम्बेडकर के अनुसार, समाजवाद को व्यावहारिक रूप में लागू करने के लिए आधारभूत उद्योगों पर राज्यों का नियंत्रण एवं स्वामित्व होना चाहिए। औद्योगिकीकरण के द्वारा समाज की सम्पन्नाता में भी वृद्धि होगी। इसका लाभ समाज के सभी वर्गों को प्राप्त होगा । दूसरी ओर, अम्बेडकर ने कृषि को भी राज्य उद्योग के रूप में रेखांकित किया। अतः सामूहिक कृषि व्यवस्था को लागू करने के पक्षधर थे, क्योंकि हमारे समाज में विषमता का मूल कारण भूमि आधारित संपत्ति थी।
- डॉ. अम्बेडकर के अनुसार,कल्याणकारी राज्य के द्वारा समाज में अभाव, गरीबी और शोषण मिटाया जाएगा, तथा एक समानता मूलक समाज का जन्म होगा। लेकिन यह वर्ग - संघर्ष के द्वारा कदापि नहीं, अपितु शांतिपूर्ण एवं संवैधानिक होगा।

<u>जाति, वर्ग और लोकतंत्र</u> -

- डॉ. अम्बेडकर ने कहा, कि विदेशियों के द्वारा किसी देश की स्वतंत्रता एवं लोगों की स्वतंत्रता में अंतर नहीं किया

व्यावहारिक नीतिशास्त्र के अनुसार – "व्यक्ति का आचरण व्यवसाय की आचार संहिता के अनुसार होना चाहिए।

सत्यनिष्ठा :- सत्यनिष्ठा के अंग्रेजी पर्याय "Integrity" का तात्पर्य किसी चीज के संपूर्ण रूप से जुड़े होने और आंतरिक सुसंगति से है। सत्यनिष्ठा के अंतर्गत नैतिक सिद्धांतों के बीच में आंतरिक सुसंगति और नैतिक सिद्धांतों तथा व्यवहार में सुसंगति दोनों आती है। सत्यनिष्ठा संपन्न व्यक्ति का आचरण लगभग हा स्थिति में उसके नैतिक सिद्धांतों के अनुरूप होना चाहिए और नैतिक सिद्धांत वस्तुनिष्ठ आधार पर नैतिक होना चाहिए।

सत्यनिष्ठा के प्रकार :- सत्यनिष्ठा बहुत व्यापक शब्द है इसे अधिक सुपरिभाषित करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों के अनुसार देखा जा सकता है जैसे बौद्धिक सत्यनिष्ठा , व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा , व्यावसायिक सत्यनिष्ठा , कलाकार की सत्यनिष्ठा।

बौद्धिक सत्यनिष्ठा :- अपना मूल्यांकन उन्हीं प्रतिमानों पर तथा उतनी ही कठोरता से करना है जिन पर हम किसी और का मूल्यांकन करते हैं। अगर कोई व्यक्ति पीठ पीछे किसी और के बारे में गलत बोलता है तो उसे किसी ऐसे व्यक्ति पर नाराज नहीं होना चाहिए जो उसके बारे में पीठ पीछे गलत बोलता हो। अपने सिद्धांतों और व्यवहारों पर गहराई से विचार करके उन असंगतियों या अन्तर्विरोधों की खोज करना जो हमारी सत्यनिष्ठा पर सवाल उठाते हैं और जहाँ तक संभव हो ऐसी असंगतियों को समाप्त करने की कोशिश करना।

बौद्धिक पाखंड :- इसका अर्थ है अपने लिए अलग तथा दूसरों के लिये अलग नैतिक मापदंड रखना तथा अपने अंतर विरोधों के प्रति लापरवाह रहना या उन्हें जानबूझकर नजर अंदाज करना।

व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा :- वैयक्तिक नैतिक सिद्धांतों व आचरण के बीच सुसंगति बनाए रखना। इसका संबंध संपूर्ण जीवन से है , किसी क्षेत्र विशेष से नहीं।

कलाकार की सत्यनिष्ठा :- कलाकार को वही बात करनी चाहिए जो वह सचमुच सोचता है। किसी आर्थिक लाभ या अन्य प्रकार के दबावों में आकर कोई गलत बात व्यक्त नहीं करनी चाहिए ।

व्यायसायिक सत्यनिष्ठा :- अपने व्यवसाय से जुड़े उन नैतिक सिद्धांतों का पालन करना जो उस व्यवसाय की आचार संहिता में शामिल है, जो वकील द्वारा अपने मुवक्किल की पूरी सहायता करना नैतिक है और दूसरे पक्ष के वकील से सांठ-गांठ कर लेना अनैतिक है।

व्यक्तिगत जीवन में सत्यनिष्ठा के लाभ :-

- इससे व्यक्ति की विश्वसनीयता बढ़ती है। विश्वसनीयता बढ़ने से बाजार राजनीति या प्रशासन में उसकी सफलता की संभावना बढ़ती है।
- सम्मान बढ़ाने से उसे आत्मसंतोष प्राप्त होता है। इससे निष्पादन और बेहतर होता है।
- अगर ऐसे व्यक्ति से कोई गलती हो भी जाती है तो या तो उसे अपवाद समझा जाता है। या ये माना जाता है कि उसका इरादा गलत नहीं रहा होगा।

<u>प्रशासन में सत्यनिष्ठा के लाभ</u> :-

1. कर्मचारियों और वरिष्ठ अधिकारी का विश्वास प्राप्त हो जाता है।
2. जनता का भी विश्वास प्राप्त हो जाता है। और अगर जनता को अधिकारियों पर विश्वास हो तो सामाजिक परिवर्तन तथा अन्य मामलों में उसका सक्रिय सहयोग मिलता है।

<u>सत्य निष्ठा के उदाहरण</u> :-

1. मतदाताओं या उपभोक्ताओं या नागरिकों के सामने कोई झूठा दावा न करना।
2. सफलता में उतना ही श्रेय लेना जिनका योगदान वास्तव में उस व्यक्ति का है। अधिक श्रेय मिल रहा हो तो विनम्रता से अस्वीकार कर देना।
3. विफलता की स्थिति में आगे बढ़कर उसकी जिम्मेदारी को स्वीकार करना चाहे उसमें उसके अधीनस्थों की भूमिका प्रमुख रही है।
4. व्यक्तिगत लाभ के लिए झूठ बोलने दूसरों की बुराइयाँ तारीफ करनी जैसी प्रवृतियों से बचना जैसे ।2 साल के ऊपर के बच्चों का पूरा टिकिट लेना।
5. अपनी प्रतिबद्धताओं और वायदों को निश्चित समय पर पूरा करना चाहे उसके लिए कितना भी त्याग करना पड़े।
6. किसी व्यक्ति से उतनी ही अपेक्षा करना जितना आप स्वयं उनके लिए करते हो।

<u>सत्यनिष्ठा का महत्व</u> :-

लोक सेवा का एक प्रमुख आधारभूत मूल्य सत्यनिष्ठा है। व्यापक जनहित में संवैधानिक एवं पेशेवर मूल्यों के अनुरूप अपने दायित्वों को पूर्ण करना लोक सेवकों के लिए आवश्यक है। प्रशासनिक अधिकारियों से सत्यनिष्ठा होने की अपेक्षा की जाती है। सत्यनिष्ठा का महत्व निम्नलिखित है।

- भ्रष्टाचार को न्यूनतम करने के लिए सत्यनिष्ठ होना आवश्यक है।
- सुशासन की स्थापना के लिए सत्यनिष्ठ लोक-सेवक प्रमुख भूमिका निभाते हैं।
- नागरिकोन्मुखी प्रशासन की स्थापना के लिये।
- समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण नागरिक सेवाओं की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए।
- आम जनता की प्रशासन में विश्वनीयता बढ़ती है।
- सामाजिक व आर्थिक न्याय की प्राप्ति के लिये।
- शासन एवं आम जनता के संबंधों को सुदृढ़ करने हेतु।

<u>अभिक्षमता /अभिरुचि</u> : (Aptitude)

- अभिरुचि से आशय व्यक्ति की उस तत्परता, रुझान या क्षमता से है जो किसी पद एवं उसके कार्य को

(इकाई – 5)

अध्याय – 5

समग्र व्यक्तित्व विकास

समग्र व्यक्तित्व विकास :- समग्र विकास किसी व्यक्ति का सामाजिक, भावनात्मक, शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास है। शिक्षा के प्रति समग्र दृष्टिकोण अपनाने का अर्थ है बच्चे के विकास के सभी पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना , न कि केवल उनकी शैक्षणिक प्रगति पर। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह बच्चे के समग्र कल्याण को स्थापित करने के बारे में है ।

समग्र विकास की प्रक्रियाएँ

समग्र विकास में तीन प्रक्रियाएँ शामिल हैं :-

(1) जैविक
(2) संज्ञानात्मक
(3) सामाजिक-भावनात्मक।

जैविक प्रक्रिया में शारीरिक परिवर्तन शामिल होते हैं, जैसे मस्तिष्क का विकास, शारीरिक विकास और वजन बढ़ना। इस प्रकार छोटे लोग शारीरिक रूप से बच्चों से वयस्कों में परिवर्तित हो जाते हैं। संज्ञानात्मक प्रक्रिया में सोच, बुद्धि और भाषा कौशल शामिल हैं। इस प्रकार समाज के सबसे युवा सदस्य बौद्धिक रूप से सरल से जटिल सोच की ओर बढ़ते हैं। सामाजिक -भावनात्मक प्रक्रिया में व्यक्तित्व, भावनाएँ और पारस्परिक संबंध शामिल होते हैं। इस प्रकार व्यक्तियों का व्यवहार बचकाना से परिपक्व की ओर बढ़ता है। तीनों प्रक्रियाएँ एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं और कोई भी परस्पर अनन्य नहीं है। उदाहरण के लिए, एक बच्चा अपने माता-पिता के प्यार भरे स्पर्श का जवाब संवेदना (जैविक) महसूस करके, इरादे को समझकर (संज्ञानात्मक) और सकारात्मक प्रतिक्रिया देकर (सामाजिक-भावनात्मक) करता है।

व्यक्तित्व विकास के घटक :- हमारे व्यक्तित्व में विभिन्न मूलभूत विशेषताएं और घटक शामिल हैं जो किसी व्यक्ति के संपूर्ण अस्तित्व को बनाते हैं।

व्यक्तित्व के तीन घटक :- सिगमंड फ्रायड को उन तीन बुनियादी घटकों पर अपने अध्ययन के लिए जाना जाता है जो हमारे व्यक्तित्व को बहुत प्रभावित करते हैं। उन्होंने जागरूकता के तीन स्तर बनाए जो मन के तीन अलग-अलग हिस्सों के अनुरूप हैं: चेतन मन, अचेतन मन और अवचेतन मन। उनके अनुसार, हमारे चेतन मन में हमारी वर्तमान या वर्तमान मानसिक प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं जो हमारी वर्तमान जागरूकता में एक प्रमुख भूमिका निभाती हैं। मानसिक जागरूकता का अगला स्तर हमारा अचेतन मन है, फ्रायड के अनुसार, इसमें वे शामिल होते हैं जिनके बारे में हम जानते हैं, लेकिन हम वास्तव में ध्यान केंद्रित नहीं करते हैं या ध्यान नहीं देते हैं। हम या तो इन चीज़ों पर ध्यान देने का निर्णय ले सकते हैं और जानबूझकर अपने चेतन मन को इनके बारे में जागरूक होने दे सकते हैं। मानव मन का तीसरा भाग अवचेतन है जहां हमारे कुछ विचार चेतन स्तर से भी आगे निकल जाते हैं। फ्रायड द्वारा जागरूकता के इन स्तरों से, उन्होंने हमारे व्यक्तित्व के तीन घटकों को विकसित किया: आईडी, अहंकार और सुपर अहंकार। ये हमारी सोच, भावना और व्यवहार के परिणाम हैं। आईडी मुख्य रूप से आनंद सिद्धांत पर आधारित है जिसमें हमारा दिमाग आनंद प्राप्त करना और किसी भी प्रकार के दर्द से बचना चाहता है। फ्रायड ने उल्लेख किया कि आईडी में दो प्रमुख प्रवृत्तियाँ शामिल हैं और ये इरोस और थानाटोस हैं। पहले को अन्यथा जीवन वृत्ति के रूप में जाना जाता है जो हमें आनंददायक गतिविधियों की तलाश करने के लिए प्रेरित करती है जबकि बाद वाली हमारी मृत्यु वृत्ति है जो हमें विनाश करने के लिए प्रेरित करती है। अहंकार हमारे व्यक्तित्व का अगला घटक है जो हमारी चेतना का हृदय है। इसकी विशेषता या तो प्रमुख कार्य हैं जो अन्य कार्यों के साथ-साथ अंतर्मुखता या बहिर्मुखता है। यह वास्तविकता सिद्धांत पर आधारित है जो बताता है कि हमारा दिमाग वही स्वीकार करता है जो वास्तविक है और वर्तमान में विद्यमान है। यह यह भी समझता है कि हमारे व्यवहार के अनुरूप परिणाम होते हैं। सुपर ईगो हमारे व्यक्तित्व का अंतिम घटक है जिसमें हमारे मूल्य और नैतिकता समाहित हैं। हमारा सुपर अहंकार भी आईडी की भरपाई या भरपाई कर सकता है।

पांच बड़े कारक :- हमारे विभिन्न व्यक्तित्व लक्षणों को आम तौर पर बड़े पांच कारकों के रूप में वर्गीकृत किया जाता है: बहिर्मुखता, सहमतता, कर्तव्यनिष्ठा, विक्षिप्तता और अनुभव के लिए खुलापन।

बहिर्मुखता का संबंध निवर्तमान, मिलनसार, ऊर्जा से भरपूर, उत्साह और कार्य-उन्मुख होने से है। दूसरी ओर, अंतर्मुखता, जीवंतता और ऊर्जा की कमी को संदर्भित करती है। सहमति सहयोग और सामाजिक सद्भाव के संदर्भ में हमारे मतभेदों को प्रकट करती है। सहमत लोग एक-दूसरे के साथ अच्छा व्यवहार करना पसंद करते हैं जबकि असहमत व्यक्ति स्वार्थ और व्यक्तिगत भलाई के बारे में अधिक चिंतित होते हैं। कर्तव्यनिष्ठा इस बात पर केंद्रित है कि हम अपने आवेगों और इच्छाओं को कैसे प्रबंधित और नियंत्रित करते हैं। कर्तव्यनिष्ठ लोग बुद्धिमान, संगठित और दृढ़निश्चयी होते हैं। न्यूरोटिसिज्म उन व्यक्तियों में स्पष्ट होता है जो भावनात्मक रूप से प्रतिक्रियाशील होते हैं और किसी विशेष मजबूत नकारात्मक भावना से गुजर चुके होते हैं या गुजर रहे होते हैं। अनुभव के प्रति खुलापन एक ऐसा गुण है जो रचनात्मक, कल्पनाशील, जिज्ञासु और बुद्धिजीवी लोगों की विशेषता है।

व्यक्तित्व के आवश्यक लक्षण :- हमारे व्यक्तित्व की पहचान हमारे पूरे चरित्र के सिर्फ एक पहलू जैसे हमारे व्यवहार या दृष्टिकोण से नहीं बल्कि हमारे पैटर्न वाले

बफ़ैलो राज्य में उच्च प्रदर्शन करने वाले प्रबंधक और पेशेवर अधिकांश समय प्रदर्शन करते हैं। लक्ष्य के नीचे बफ़ैलो राज्य के सभी प्रबंधकों और पेशेवरों का अपेक्षित व्यवहार है। इस मूल्यांकन का ध्यान व्यावसायिक विकास पर है, मूल्यांकन पर नहीं और जितना संभव हो उतना ईमानदार और वस्तुनिष्ठ होना आवश्यक है। यह माना जाता है कि हर किसी को किसी न किसी स्तर पर विकास से लाभ हो सकता है। कुछ कर्मचारियों को काम पर प्रभावी ढंग से प्रदर्शन करने के लिए व्यवहार या कौशल हासिल करने की आवश्यकता हो सकती है, जबकि अन्य पहले से मौजूद कौशल को निखारना या सुधारना चाह सकते हैं।

असफलता से सीखना :-

1. प्रयासों के क्या कमी रह गयी।
2. किस बिंदु पर फ़ोकस करना है।
3. अगली तैयारी करने के लिये क्या क्या संसाधनों की आवश्कता होगी।
4. टाइम मैनेजमेंट कैसे किया जाये।
5. अपनी वीकनेस और स्ट्रेंथ की सही जानकारी।

सरकारी योजनाओं के सफल क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी रणनीतिया :- अलग-अलग पदों पर आसीन लोगों की अलग-अलग प्राथमिकताएँ हो सकती हैं। किसी भी योजना के कुशल कार्यान्वयन के लिये आवश्यक है कि शासनिक पारिस्थितिकी तंत्र में मौजूद लोगों की प्राथमिकताओं और लक्ष्यों में एकरूपता लाई जाए। PM-CM-DM मॉडल इस संदर्भ में महत्त्वपूर्ण और परिवर्तनकारी कदम हो सकता है।

- जब लक्ष्य अपेक्षाकृत कठिन होता है तो लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कार्य कर रहे लोगों को वह असंभव सा प्रतीत होता है जिसके कारण वे अपने आप को लक्ष्य की प्राप्ति के लिये अभिप्रेरित नहीं कर पाते और इस कार्य हेतु यथासंभव प्रयास भी नहीं करते। योजना के कुशल कार्यान्वयन हेतु आवश्यक है कि एक ऐसे दल का गठन किया जाए जो योजना के सफल कार्यान्वयन पर विश्वास करता हो और इस संदर्भ यथासंभव प्रयास कर सके।
- योजना के संबंध में आम लोगों को जागरूक करना भी योजना की सफलता के लिये आवश्यक माना जाता है। योजना के संबंध में सभी स्तरों पर संवाद काफी आवश्यक होता है। इस कार्य हेतु स्वयंसेवकों अर्थात् वालंटियर्स का एक ग्रुप बनाया जा सकता है जो ज़मीनी स्तर पर योजना के संबंध में आम लोगों से संवाद कर सकें। साथ ही प्रसिद्ध हस्तियों को योजना से जोड़ना भी इस संदर्भ में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।
- योजना के कुशल कार्यान्वयन के लिये समय-समय पर उसकी प्रगति कार्यों का मूल्यांकन करना भी आवश्यक है। साथ ही योजना के संबंध में विभिन्न अनुसंधान को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। अनुसंधानों और मूल्यांकनों के परिणामों में योजना के संबंध में जो भी कमियाँ सामने आती हैं उन्हें सुधारा जाना भी उतना ही आवश्यक है।

नागरिक बोध :- हमें सार्वजनिक रूप से कैसा व्यवहार करना चाहिए और हमारा सामाजिक व्यवहार कैसा होना चाहिए, इसे सिविक सेंस (नागरिक बोध) कहा जाता है।

<u>अच्छे नागरिक बोध के कुछ प्रमुख तत्व निम्न हैं</u>

1. ***जागरूकता :-*** एक अच्छा नागरिक होने के लिए जागरूकता महत्वपूर्ण है। यह जागरूकता सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और पर्यावरणिक मुद्दों के प्रति अवगत होने को कहती है। व्यक्ति को अपने समुदाय और देश की समस्याओं के बारे में सूचित रहने की चाहिए और सक्रिय भूमिका निभाने की क्षमता होनी चाहिए।
2. ***समरसता :-*** अच्छे नागरिक को समरसता और सहिष्णुता की भावना रखनी चाहिए। यह सभ्यता और संघटन बनाए रखने में मदद करता है और समाज में सामंजस्य और सम्बन्धों को स्थापित करता है।
3. ***जिम्मेदारी :-*** एक अच्छा नागरिक अपनी जिम्मेदारियों को समझता है और उन्हें पूरा करने के लिए सक्रिय रहता है। वह सामाजिक न्याय, कानूनी नियमों का पालन करता है और सार्वजनिक हित के लिए योगदान देता है।
4. ***सहभागिता :-*** अच्छे नागरिक को सामाजिक सहभागिता की भावना रखनी चाहिए। वह स्वेच्छापूर्वक समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय रहता है, सेवा कार्यों में भागीदारी लेता है और सामुदायिक संगठनों में योगदान देता है।
5. ***न्यायपूर्ण व्यवहार :-*** एक अच्छा नागरिक न्यायपूर्ण व्यवहार को अपनाता है। वह अपने साथी मनुष्यों के प्रति सम्मान और न्याय का आदर्श बनाए रखता है। वह दूसरों के अधिकारों का सम्मान करता है और समानता, ईमानदारी, और न्याय के मानकों को प्रणाली बनाए रखता है।

संस्था के प्रति निष्ठा :- पारस्परिकता के बारे में वफादारी सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण है। कर्मचारियों को यह अहसास होना चाहिए कि संगठन उनके लिए सर्वश्रेष्ठ चाहता है, और परिणामस्वरूप वे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना जारी रखेंगे और दूसरी नौकरी की तलाश नहीं करेंगे। इस प्रकार कर्मचारी की वफादारी सबसे पहले इस बात से निर्धारित होती है कि संगठन ने चीजों को कैसे व्यवस्थित किया है और इसे कर्मचारी तक कैसे पहुंचाया जाता है।

निष्ठा के सिद्धांत :- जब नीति क्रियान्वित की जाती है, तो कर्मचारी की केंद्रीय भूमिका होनी चाहिए। यदि कोई संगठन दिखाता है कि वह कर्मचारियों के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर रहा है, तो इससे कर्मचारियों में पारस्परिक दायित्व की भावना पैदा होगी। आपको अपने कर्मचारियों को यह एहसास भी दिलाना चाहिए कि उनके साथ उचित व्यवहार किया जा रहा है: समान काम के लिए समान वेतन । कर्मचारियों को इस बात पर भरोसा करना चाहिए कि नियोक्ता के रूप में आप उनके लिए सर्वश्रेष्ठ

(इकाई – 5)

अध्याय – 5

केस स्टडी

केस स्टडी : एक अनुभवी महिला उद्यमी

बेहद गरीब परिवार से आने वाली श्रीमती के.के.के. की कोई औपचारिक शिक्षा नहीं हुई और अब वह लगभग 80 वर्ष की हैं। वह जो भी करती है पूरी ईमानदारी और लगन से करती हैं। वह बचपन से ही बहुत उद्यमशील रही हैं। वह चावल, विभिन्न फल और साबुन सहित विभिन्न उत्पाद बेचने के लिए विभिन्न गांवों के बाजारों (साप्ताहिक बाजारों) में जाना चाहती है, जो कभी-कभी 20-30 किलोमीटर दूर होते हैं।

इस दौरान, उसने सीखा कि लोगों के साथ कैसे संवाद किया जाए और नियमित ग्राहकों और आपूर्तिकर्ताओं के साथ अच्छे संबंध स्थापित किए। वह अन्य सफल महिला उद्यमियों और पुरुष उद्यमियों से मिलीं और उनके साथ मित्रता स्थापित की। उसने कड़ी मेहनत की और जल्द ही वह बहुत सफल हो गई और अपने परिवार की आसानी से मदद करने लगी।

जब उनकी शादी हुई तो उन्होंने खुद को कृषि गतिविधियों में भी शामिल कर लिया और कई सब्जियां उगाईं। उन्होंने कई एकड़ जमीन हासिल की और विभिन्न बाजारों में बड़ी मात्रा में सामान की आपूर्ति शुरू कर दी। उसके पास कई मजदूर थे जिन्हें वह आसानी से हासिल कर सकती थी क्योंकि शुरुआती दिनों में उसने विभिन्न गांवों के लोगों के साथ अच्छे संबंध बनाए थे। कृषि गतिविधियों में 10 साल बिताने के बाद, उन्होंने अपना व्यवसाय निर्माण और परिवहन की ओर मोड़ दिया और उन्होंने एक ट्रक खरीदा, जिसे उन दिनों डॉक ट्रक कहा जाता था। इससे उन्हें बहुत मदद मिली, खासकर उन दिनों जब इससे कृषि उत्पादों के वितरण में मदद मिलती थी।

इसके बाद उन्होंने एक जीप खरीदी, जिससे उन्हें एक गांव से दूसरे गांव तक जाने में मदद मिली. अपनी उद्यमशीलता के कारण, उन्होंने एक बार फिर अपनी सफलता साबित की और अपने परिवहन व्यवसाय को सफल बनाया और एक मिनीबस खरीदी जो उस समय उपलब्ध थी और एक एम्बेसडर कार खरीदी जो पहले खरीदी गई कारों से बेहतर थी। उन दिनों प्रतिस्पर्धा कम थी, जिसका उन्हें बहुत फायदा हुआ। श्रीमती के.के.के. उन्होंने कभी किसी बैंक या व्यक्ति से कोई ऋण या वित्तीय सहायता नहीं ली क्योंकि उनका मानना है कि कड़ी मेहनत और सरल जीवनशैली व्यक्ति को आर्थिक रूप से सक्षम बनाती है। हालाँकि बाद में सुप्रीम कोर्ट द्वारा वनों की कटाई पर प्रतिबंध के कारण परिवहन व्यवसाय में गिरावट आई, लेकिन वह इससे हतोत्साहित नहीं हुईं और वास्तव में उन्हें कई नए अवसर मिले और अब उनका व्यवसाय जनरल स्टोर्स और रियल एस्टेट की ओर बढ़ गया है।

उन्होंने कुछ ऐसी चीजों का जिक्र किया जो अनिवार्य रूप से वित्तीय स्थिति, अस्वस्थ होना और गर्भावस्था जैसी बाधाएं पैदा करती हैं। उन्होंने कुछ अन्य कठिनाइयों का भी उल्लेख किया जैसे कर्मचारियों का काम के प्रति वफादार न होना, उच्च परिवहन लागत, बढ़ती प्रतिस्पर्धा। महंगाई, माल के वितरण और ग्राहकों को ढूंढने के कारण व्यवसाय को प्रबंधित करना कठिन था। अशिक्षा के कारण कागजों पर क्या लिखा है यह बताने के लिए उन्हें किसी पर निर्भर रहना पड़ता था। हालाँकि, इन समस्याओं का समाधान अनुभव, कड़ी मेहनत, धैर्य और पारिवारिक सहयोग से मिला।

परिवार से नकारात्मकता का सामना करने के बजाय, उन्होंने एक सफल उद्यमी बनने के लिए सर्वोत्तम अवसरों का सर्वोत्तम उपयोग किया। इसने उनकी जवाबदेही, ताकत और वर्तमान और भविष्य की स्थितियों की समझ में योगदान दिया।

केस स्टडी : जीवन की यात्रा

17 साल की उम्र में, जब कई लड़कियां उच्च शिक्षा के लिए कॉलेज जाती थीं, उनकी शादी हो गई। हालाँकि, सरला बस्तिना सिर्फ घर पर नहीं रहना चाहती थी। वह अपना कुछ करना चाहती थी। वह स्वतंत्र होकर अपना नाम कमाना चाहती थी। सरला कहती हैं, "मेरे पिता ने 2004 में मुझे व्यवसाय शुरू करने के लिए 15,000 रुपये दिए थे। मैंने अपने घर के पीछे बाड़े में मशरूम की खेती शुरू की। तब से, मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा।"

आज वह उस क्षेत्र में एक सफल उद्यमी हैं जहां जाने से कई लोग डरते हैं। 32 साल की सरिता का सफर अमूल्य रहा है. उनका दृढ़ संकल्प स्पष्ट है क्योंकि उन्हें 2009 के प्रतिष्ठित यूथ इंटरनेशनल (वाई.बी.आई.) (इंटरनेशनल यूथ बिजनेस) पुरस्कार के लिए चुना गया है। वाई.बी.आई. युवा उद्यमियों को प्रोत्साहित करने के लिए इंग्लैंड के प्रिंस चार्ल्स द्वारा स्थापित एक नेटवर्क है। सऊदी अरब की घदा-बा-एगील और केन्या की लिमिट इंडस्ट्रीज से दो अन्य उम्मीदवारों को भी इस साल के महिला श्रेणी पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया है। इस समारोह में एक हजार अमेरिकी डॉलर के नकद पुरस्कार के साथ एक प्रमाण पत्र और एक पदक प्रदान किया जाएगा।

केस स्टडी : हस्तशिल्प का क्षितिज: पूनम गुप्ता

जो उद्यमी हस्तशिल्प व्यवसाय शुरू करना चाहता है उसे कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है, लेकिन पूनम गुप्ता को ऐसा नहीं करना पड़ा; यह उसके लिए कोई प्रेरक कारक नहीं था। उन्होंने यह व्यवसाय इसलिए चुना क्योंकि अपनी नौकरी के दौरान उन्हें चांदी के बर्तन बनाने का अनुभव प्राप्त हुआ था और आवश्यक बुनियादी तकनीकी कौशल उनके पास पहले से ही थे।

(इकाई – 4)

अध्याय – 4

औद्योगीकरण, वैश्वीकरण, सामाजिक विकास और जनसंख्या

औद्योगीकरण

औद्योगीकरण एक प्रक्रिया है जो उत्पादन के तरीके में परिवर्तन को संदर्भित करता है। मूल रूप से, यह कृषि उत्पादन और रोजगार पर आधारित अर्थव्यवस्था से विनिर्माण के प्रभुत्व वाली अर्थव्यवस्था की ओर गतिशीलता को संदर्भित करता है। उत्पादन के तरीके के साथ उत्पादन के संबंध बदलते हैं। इसी तरह, श्रम पर नियंत्रण के तरीके बदल जाते हैं। यह स्थान, उद्यम और प्रौद्योगिकी के प्रकार पर निर्भर करता है। औद्योगीकरण की प्रक्रिया में कारखानों की स्थापना शामिल है जिसमें संगठित तरीके से माल का उत्पादन किया जाता है। इसे समग्र विकास के एक आवश्यक साधन के रूप में देखा जाता है।

औद्योगीकरण का प्रभाव

यूरोप में औद्योगिक क्रांति ने अर्थव्यवस्था के औद्योगीकरण के माध्यम से "पारंपरिक " समाजों का "आधुनिक समाजों में ऐतिहासिक परिवर्तन किया था (कोटक, 2011) । यूरोपीय समाजों ने औद्योगीकरण द्वारा सहायता प्राप्त एक नई अर्थव्यवस्था का लाभ उठाया। तीव्र औद्योगीकरण की प्रक्रिया में व्यक्तियों की सांस्कृतिक प्रणालियों और उपकरणों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। औद्योगीकरण की प्रक्रिया ने व्यक्ति की भूमिका को पूरक और तीव्र किया। हालांकि, विभिन्न समाजों पर औद्योगीकरण के प्रभाव में अंतर हैं। व्यक्तिगत विशेषाधिकारों पर सामूहिक चेतना पर जोर देने वाली सांस्कृतिक प्रणालियों ने औद्योगीकरण में धीमी गति का अनुभव किया।

पूर्व-औद्योगिक समाजों ने औपचारिक शिक्षा को लाभकारी नहीं देखा है। हालाँकि, देखा है। हालाँकि, औद्योगीकरण ने शिक्षा और पश्चिमी संस्कृति के बारे में धारणाओं को नाटकीय रूप से बदल दिया (टिस्लर, 2011) । औद्योगीकरण का प्रजनन क्षमता और मृत्यु दर पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। कृषि परिवहन और वाणिज्य में प्रगति ने लोगों के लिए बेहतर आहार लेना संभव बना दिया, और निर्माण में प्रगति ने पर्याप्त कपड़े और आवास को अधिक व्यापक रूप से उपलब्ध कराया। लोगों की वास्तविक आय में वृद्धि से सार्वजनिक स्वच्छता, स्वास्थ्य देखभाल और सार्वजनिक शिक्षा में सुधार हुआ (टिस्लर, 2011) । औद्योगीकरण ने बढ़ते शहरों के बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए रोजगार, संचार और परिवहन के साधन प्रदान किए जो निवासियों की बढ़ती संख्या का समर्थन कर सके (फेरिस एंड स्टीन, 2010) । औद्योगिक क्रांति के बाद काम की प्रकृति और कार्यस्थल की अवधारणा नाटकीय रूप से बदल गई । परिवार और परिजन (नातेदारी) समूह पूर्व - औद्योगिक व्यवस्था में कार्यस्थल पर इकाइयों के रूप में लगे हुए थे। हालाँकि, व्यक्ति औद्योगिक समाज में कार्यस्थल पर सामाजिक संबंधों से संबंधित नहीं होते हैं।

औद्योगीकरण समाज को कैसे प्रभावित करता है?

औद्योगीकरण से नौकरियाँ पैदा होती हैं जो लोगों को खेतों और गाँवों से शहरों की ओर खींचती हैं जहाँ विनिर्माण होता है। वे नौकरियाँ चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, एक छोटे किसान परिवार के अनिश्चित अस्तित्व के लिए अक्सर वे बेहतर होती थीं।

परिणाम शहरी उपभोक्ताओं की एक नई पीढ़ी है। इन उपभोक्ताओं को सामान और सेवाएँ प्रदान करने के लिए सभी प्रकार के व्यवसाय सामने आते हैं। समय के साथ, कारीगरों और दुकानदारों का एक बड़ा मध्यम वर्ग उभर कर सामने आता है।

एक बड़ा श्रमिक वर्ग भी उभर कर सामने आया और उनके लिए परिस्थितियाँ अक्सर बहुत कठोर थीं। श्रमिक संघों का विकास औद्योगिक क्रांति के शक्तिहीन श्रमिकों द्वारा सामना की गई स्थितियों का प्रत्यक्ष परिणाम है।

औद्योगीकरण के प्रमुख सामाजिक प्रभाव -

औद्योगीकरण के प्रमुख सामाजिक प्रभाव निम्न प्रकार हैं

(क) सामुदायिक भावना का ह्रास :- ग्रामवासियों में 'हम' की भावना पायी जाती थी और वे परिवार रक्त सम्बन्ध एवं समुदाय के लोगों से घनिष्ठ रूप से बंधे हुए थे। परस्पर सहयोग एवं प्रेम से जीवन व्यतीत करते थे एवं एक-दूसरे के सुख-दुख में हाथ बंटाते थे, किन्तु औद्योगीकरण के कारण इन सम्बन्धों में शिथिलता आयी, अपरिचितता बढ़ी और व्यक्तिवादी प्रवृत्ति ने जोर पकड़ा तथा सामुदायिक भावना क्षीण हुई। आपसी सम्बन्धों का दायरा परिवार जाति एवं गांव से बढ़कर सम्पूर्ण विश्व तक फैल गया।

(ख) सामाजिक नियन्त्रण का अभाव :- ग्रामीण जीवन में व्यक्ति पर परिवार, जाति-पंचायत, ग्राम पंचायत प्रथाओं एवं धर्म का नियन्त्रण था। औद्योगीकरण के कारण बड़े नगरों में यह सब असम्भव हो गया और नियन्त्रण के औपचारिक तरीकों जैसे कानून, पुलिस, न्यायालय, सरकार, आदि का सहारा लिया जाने लगा । नियन्त्रण के प्राथमिक तरीकों में जो शक्ति होती है, वह द्वैतीयक में नहीं नियन्त्रण के अभाव के कारण ही औद्योगिक केन्द्रों में उच्छृंखलता दिखायी देती है।

(ग) व्यक्तिवाद को प्रोत्साहन :- औद्योगीकरण ने व्यक्तिवाद को प्रोत्साहित किया। आर्थिक क्षेत्र में व्यक्तिवादी प्रवृत्ति के कारण एकाधिकार, गलाकाट प्रतियोगिता एवं पूंजीवाद का जन्म हुआ। व्यक्तिवाद व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर जोर देता है तथा वह सरकार एवं राज्य का हस्तक्षेप नहीं चाहता, किन्तु नियन्त्रण के अभाव में व्यक्ति में कई बुराइयां जन्म लेती हैं।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - ⬇ (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp - https://wa.link/dy0fu7 1 web.- https://bit.ly/3BGkwhu

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

whatsapp - https://wa.link/dy0fu7 2 web.- https://bit.ly/3BGkwhu

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
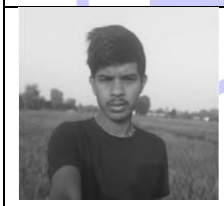	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379	Jind (Haryana)

And many others.....

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

WhatsApp करें - https://wa.link/dy0fu7

Online Order करें - https://bit.ly/3BGkwhu

Call करें - 9887809083

whatsapp - https://wa.link/dy0fu7 6 web.- https://bit.ly/3BGkwhu

FREE SAMPLE